Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश में आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका

डॉ. मोहन निमोले* दशरथ प्रसाद**

*** सहायक प्राध्यापक (भूगोल) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास. माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत**
**** शोधार्थी (भूगोल) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास. माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए और आत्मनिर्भर होने के लिए कृषि संसाधनों के साथ क्षेत्र के विभिन्न संसाधनों का विशेष महत्व होना है, किसी एक सेक्टर के सहयोग से चलने या विकास के पायदान तय करने को विकसित प्रदेश नही कहा जा सकता है। अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान हो या कृषि ही उस प्रदेश की जनसंख्या के अधिकांश भाग के भरण-पोषण का एक मात्र आधार हो, सकता है। उस प्रदेश की सरकार का यह उत्तरदायित्व होता है, कि इसकी उन्नति पर विशेष ध्यान दे। बदलते परिदृश्य के आधार उद्योग क्षेत्र की ओर नियत्रंण आगे बढते जाते है। लाभ की आशा से प्राथमिक सक्टेर का धीरे-धीरे स्तर कमजोर करते जाते हैं, यदि हम उद्योगों का विकास की ओर ध्यान देते है। तो हमें कच्चे माल और प्राथमिक सेक्टर की वस्तुओं की ओर ध्यान देना होगा।

शब्द कुंजी – प्राथमिक सेक्टर, अर्थव्यवस्था, औद्योगिक विकास, उपार्जन, जी.वी.ए. आत्मनिर्भर।

प्रस्तावना – किसी भी देश या प्रदेश के आर्थिक विकास में कृषि का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। कृषि से केवल भोजन तथा कच्चे माल की प्राप्ति नहीं होती है, बल्कि जनसंख्या के एक बड़े भाग को रोजगार की उपलब्ध कराता है। कृषि तथा उद्योग परस्पर एक दूसरे पर निर्भर करते है। एक क्षेत्र का विकास होने पर दूसरे क्षेत्र का भी विकास होता है। एक क्षेत्र का उत्पादन दूसरे क्षेत्र के लिए आगत बन जाता है। एक क्षेत्र के विकास होने का अर्थ है,दूसरे क्षेत्र को अधिक आगतों का प्रवाह। दूसरे की सहायता करो यदि आप अपनी सहायता चाहते है। यही दोनों क्षेत्रों की निर्भरता का सारांश है। जैसे-जैसे किसी देश का आर्थिक विकास होता है, वैसे-वैसे कृषि की भूमिका में भी परिवर्तन आ जाता है। जब द्धितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों का विकास होता है तो कृषि की महत्ताा कम हो जाती है।

कुछ समय पश्चात् कृषि क्षेत्र का प्रदेश,राष्ट्रीय आय में हिस्सा भी कम हो जाता है, परन्तु कृषि क्षेत्र का अन्य क्षेत्रों पर निर्भरता बढ़ जाती है। कृषि तथा उद्योग दोनों एक दूसरे के पूरक है, प्रतियोगी नहीं। बिना कृषि के आधुनीकरण के औद्योगिक विकास सम्भव नहीं है क्योंकि यदि कृषि विकास नहीं होगा तो अधिकतर जनसंख्या के पास क्रयशक्ति नहीं होगी तथा बाजार का विस्तार भी नहीं होता। अत: यह बात भी सत्य है, कि बिना औद्योगिकरण के कृषि विकास भी सम्भव नहीं है। अत: कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्र का साथ-साथ विकास होना चाहिए। किसी भी अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है।

कोई भी प्रदेश या देश जहाँ की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान हो तथा कृषि ही उस देश की जनसंख्या के अधिकांश भाग के भरण-पोषण का एक मात्र आधार हो उस देश की सरकार का यह उत्तरदायित्व होता है कि इसकी उन्नति पर विशेष ध्यान दे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अपनी सरकार ने कृषि विकास के महत्व को स्वीकारते हुए योजनाओं मे इसको मुख्य स्थान दिया। फलस्वरूप हरित क्रान्ति का सृजन और चलन हुआ, आधुनिक तकनीकी युक्त कृषि यन्त्रों, कृषि उपकरणों, उन्नत बीजो का प्रचलन तथा रासायनिक उर्वरको के उपयोग में वृद्धि ने उत्पादन तथा उत्पादकता के स्तर को समुनन्त किया।

उद्देश्य:

1 कृषि आधारित उद्योग को बढ़वा देना।
2 कृषि फसलों में उत्पादन स्तर में वृद्धि करना।
3 कृषि क्षेत्र में तकनीकी एवं रोजगार स्तर में वृद्धि करना।
4 प्राथमिक सेक्टर को कमजोर हो से रोकना,मानव जीवन के लिए पर्याप्त पोषण स्तर बनाना।

अध्ययन क्षेत्र: मध्य प्रदेश भारत के मध्य में स्थित है इससे भारत का हृदय प्रदेश कहा जाता है, प्रदेश का लगभग आयातकर है जिसका उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तार 605 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम की ओर विस्तार 870 किलोमीटर है प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 308,252 वर्ग किलोमीटर है इसका अक्षांशीय विस्तार $26^{0}30'$ उत्तरी अक्षांश से $21^{0}06'$ उत्तरी अक्षांश तथा $74^{0}09'$ पूर्वी देशांतर से $42^{0}48'$ पूर्वी देशांतर पर स्थित है, मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या (2011) के अनुसार 7,26,26,809 निवास करती है।

विधि: प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न प्रकार के आंकड़ो को द्धितीय आंकड़ो से हल किया गया है, जैसे खाद्य उपभोक्ता मामले और सार्वजनिक वितरण विभाग, मध्यप्रदेश शासन, मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वे, एम.पी. वेयर हाउसिंग एंड लॉजिस्टिक कॉर्पोरेशन, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, नाबार्ड रिपोर्ट अन्य संस्थों आंकड़ो से प्रस्तुत किया गया है।

मध्यप्रदेश में कृषि का स्तर: मध्यप्रदेश देश के खाद्यान्न, दलहन और तिलहन के शीर्ष उत्पादक राज्यों में से एक है। यह देश के खाद्यान्न का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। पिछले दो दशकों में मध्यप्रदेश में कृषि का विकास दर उच्च रहा है। वर्ष 2022-23 में मध्यप्रदेश राज्य के सकल मूल्य वर्धन (जी.वी.ए.) में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान 36.32 प्रतिषत है।

कृषि उत्पादन: कृषि उत्पादन वर्ष 2022-23 के दौरान फसल क्षेत्र में 5.46 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्ष 2021-22 की अपेक्षा वर्ष 2022-23 में अनाज के क्षेत्रफल में क्रमश: 1.11 प्रतिशत की वृद्धि रही है। अनाज एवं तिलहन उत्पादन में क्रमश: 2.58 एवं 16.38 प्रतिशत की वृद्धि तथा दलहन उत्पादन में 17.04 प्रतिशत की वृद्धि रही है। कु ल फसलों के उत्पादन में गत वर्ष की तुलना में वर्ष 2022-23 में 4.16 प्रतिशत की वृद्धि परिलक्षित हुई है।प्रमुख फसलों का उत्पादन पिछले कुछ वर्षों में राज्य में कृषि उत्पादकता में सुधार आया है। अनाज के अंतर्गत गेहूं और धान मध्यप्रदेश की प्रमुख फसलें हैं। धान के क्षेत्राच्छादन में वर्ष 2020-21 की अपेक्षा वर्ष 2021-22 में 12.00 प्रतिशत की वृद्धि परिलक्षित हुई। धान उत्पादन में वर्ष 2020-21 की तुलना में वर्ष 2021-22 में 5.25 प्रतिशत की वृद्धि परिलक्षित हुई 45 और उत्पादन गत वर्ष 2020-21 के 12502 हजार मैट्रिक टन से बढ़कर वर्ष 2021-22 में 13193 हजार मैट्रिक टन हो गया। पिछले दस वर्षों में धान का औसत उत्पादन 80.87 लाख मेट्रिक टन है। इसी प्रकार मध्यप्रदेश में मक्का और गेहू का औसत उत्पादन पिछले 10 वर्षों में 36.93 लाख मेट्रिक टन और 245.89 करोड़ मेट्रिक टन रहा। मक्का उत्पादन वर्ष 2020-21 में 4430.00 हजार मेट्रिक टन रहा जो 2021-22 में बढ़कर 4607 हजार मेट्रिक टन हो गया जो पिछले वर्ष की अपेक्षा में 4.00 प्रतिशत ज्यादा था।

वाणिज्यिक फसलों : प्रमुख वाणिज्यिक फसलों का उत्पादन राज्य में प्रमुख वाणिज्यिक फसलों में सरसों, सोयाबीन और कपास शामिल हैं। मध्यप्रदेश भारत में सोयाबीन का सबसे बड़ा उत्पादक है। सरसों का उत्पादन पिछले वर्ष 2020-21 से 2021-22 में 29.38 प्रतिशत की उछाल दिखाते हुए 1307 हजार मेट्रिक टन से बढ़कर 1691 हजार मेट्रिक टन हो गया। सोयाबीन का उत्पादन वर्ष 2020-21 में 3370 हजार मेट्रिक टन से 60 प्रतिशत बढ़कर वर्ष 2021-22 में 5392 हजार मेट्रिक टन हो गया। गन्ने का उत्पादन पिछले वर्ष 2020-21 में 544 हजार मेट्रिक टन रहा जो वर्ष 2021-22 में 19.67 प्रतिशत बढ़कर 651 हजार मेट्रिक टन हो गया। कपास फसल का रकबा पिछले वर्ष के 588 हजार हेक्टेयर से घटकर अगले वर्ष 560 हजार हेक्टेयर रह गया। प्रदर्शित ग्राफ से पता चलता है कि पिछले 10 वर्षों में सरसों, सोयाबीन और कपास औसत उत्पादन में क्रमश: 10.3,55.13 और 8.5 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर दर्शाता है।

कृषि भंडारण:

तालिका क्रमांक 1: कृषि भंडारण शाखाओं की वित्तीय स्थिति (लाख रुपये में)

वर्ष	आय	व्यय	लाभ (कर पश्चात)
2020-21	98477.41	68362.74	30114.67

स्रोत: एमपी वेयर हाउसिंग एंड लॉजिस्टिक कॉर्पोरेशन

गेहूं और धान का उपार्जन वर्ष 2022-23 में रबी में 5.9 लाख किसानों से 46.03 लाख मेट्रिक टन गेहूं का उपार्जन किया गया। उपार्जित गेहूँ हेतु कुल राशि रु 9271 करोड़ का भुगतान किसानों को किया जा चुका हैं।

तालिका क्रमांक 2: मध्यप्रदेश: गेहूं एवं धान का उपार्जन वर्ष 2018-19 वर्ष से 2022-23

वर्ष	गेहूं एवं धान कुल उपार्जन(मे.टन में)		गेहूं एवं धान भुगतान (राशि करोड़ रुपये में)	
	गेहूं	धान	गेहूं	धान
2018-19	73.16	21.36	11298.21	2971.43
2019-20	73.64	25.85	13560.59	4652.54
2020-21	129.42	37.26	24806.91	6957.08
2021-22	128.15	45.82	25301.62	8835.96
2022-23	46.03	-	927.42	-

स्रोत: खाद्य उपभोक्ता मामले और सार्वजनिक वितरण विभाग, मध्यप्रदेश शासन वर्ष 2021-22 में खरीफ फसल के उपार्जन अंतर्गत 6.61 लाख किसानों से 45.82 लाख मेट्रिक टन धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपार्जन किया गया। उपार्जित धान हेतु किसानों को कुल राशि रु 8835 करोड़ का भुगतान किया गया है।

प्रमुख दालें : प्रमुख दालों का उत्पादन मध्यप्रदेश भारत में दालों का एक प्रमुख उत्पादकहै। मध्यप्रदेश में उगाई जाने वाली प्रमुख दलहनी फसलों में तुअर (अरहर), चना (ग्राम), मसूर (लेन्टिल) और उड़द हैं। दर्शाये हुए ग्राफ से पता चलता है कि चना, उड़द और मसूर का औसत उत्पादन पिछले 10 वर्षों में 35.83,7.35 और 4.78 लाख मेट्रिक टन रहा। विगत दस वर्षों में चना, उड़द और मसूर के उत्पादन में 2.49,32.9 और 17.76 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि हुई है। उड़द के उत्पादन में पिछले वर्ष की तुलना में 2021-22 के दौरान 97.54% की वृद्धि हुई। वर्ष 2020-21 की तुलना में वर्ष 2021-22 में अरहर के क्षेत्र कवरेज में 2.74 प्रतिशत (219 से 225 हजार हेक्टेयर) की वृद्धि परिलक्षित हुई है।

मध्य प्रदेश की आर्थिक स्थिति की समीक्षा: सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र, क्षेत्रीय ग्रामीण और लघु वित्त बैंको में कोविड के बाद एन.पी.ए. में समग्र सुधार देखा जा सकता है। जहां कृषि, एम.एस.एम.ई., शिक्षा, आवास, प्राथमिकता और गैर-प्राथमिकता क्षेत्र मुख्य रूप से कृषि में (14%) में सर्वाधिक एन.पी.ए. दर्ज किया गया है, इसके बाद प्राथमिकता क्षेत्र (11.70%) है जहां एन.पी.ए. 10% से अधिक है, हालांकि अन्य क्षेत्रों जैसे एम.एस.एम.ई. (6.70%), आवास (7%) शिक्षा (8%) और गैर-प्राथमिकता वाले क्षेत्रों (4.12%) में यह 10% से कम है।

संभाग कृषि फसल जी.वी.ए, :

तालिका क्रमांक 3: मध्यप्रदेश के संभाग वार कृषि-फसल जी.वी.ए. (2019-20) (राशि करोड़ रुपये में)

क्र.	संभाग	कृषि फसल जी.वी.ए.
1	जबलपुर	58,323.15
2	उज्जैन	60,100.1
3	शहडोल	12,686.52
4	चंबल	18,469.36
5	ग्वालियर	32,885.7
6	इंदौर	58,314.49
7	नर्मदापुरम	18,996.83
8	रीवा	30,622.92
9	सागर	33,605.76
10	भोपाल	37,584.29
	कुल	3,61,589.2

स्रोत: नाबार्ड रिपोर्ट (2022)वर्तमान मूल्य पर आधारित

प्रचलित मूल्यों पर द्वितीयक क्षेत्र की आर्थिक गतिविधि द्वारा जोड़ा गया सकल वर्धित मूल्य आर्थिक गतिविधि वर्ष 2021-22

विनिर्माण	89,986
बिजली, गैस, पानी की आपूर्ति और अन्य उपयोगी सेवाएं	36,304
निर्माण	79,259
द्वितीयक क्षेत्र	2,05,549

स्रोत:,आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, 2022.

कृषि आधरित उद्योग: कृषि आधारित उद्योग-धंधों में कपास उद्योग, गुड व खांडसारी, फल व सब्जियों-आधारित, आलू-आधारित कृषि उद्योग, सोयाबीन-आधारित, तिलहन-आधारित, जूट-आधारित व खाद्य संवर्धन-आधारित आदि प्रमुख उद्योग हैं। पिछले कुछ वर्षों में दूसरे उद्योगों की भांति कृषि उद्योगों में विकास हुआ है।

विधि: विभिन्न प्रकार के आंकड़ो को द्वितीय आंकड़ो से हल किया गया है, खाद्य उपभोक्ता मामले और सार्वजनिक वितरण विभाग, मध्यप्रदेश शासन, मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वे, एमपी वेयर हाउसिंग एंड लॉजिस्टिक कॉर्पोरेशन, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, 2022,नाबार्ड रिपोर्ट 2022

निष्कर्ष: मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास के लिए और आत्मनिर्भर होने के लिए कृषि संसाधनों विशेष महत्व होना चाहिये, किसी एक सेक्टर के सहयोग से चलने या विकास के पायदान तय करने को विकसित प्रदेश नही कहा जा सकता है। जनसंख्या और जीवों-जन्तु का पालन-पोषण करने के साथ-साथ आर्थिक विकास में कृषि का सहयोग मिलता है।

सुझाव: मध्यप्रदेश में आर्थिक विकास के कृषि की भूमिका से सम्बंधित कुछ सुझाव महत्वपूर्व निम्नानुसार है।

1. किसानो के हित,सुधार का कानून एवं प्रोत्साहित करना चाहिये।
2. आधुनिक कृषि के लिए प्रशिक्षण करना चाहिये।
3. प्राथमिक सक्टेरों का गिरते स्तर को बचाना और इसे बढ़वा देना चहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वे रिपोर्ट।
2. आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय,मध्यप्रदेश।
3. किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, मध्यप्रदेश।
4. खाद्य उपभोक्ता मामले और सार्वजनिक वितरण विभाग,मध्यप्रदेश।
5. www.nibsm.org.in/agriculture-based-industry-in-Hindi/

****